Acknowledgement

:: निवेदन ::

धर्म साधना के क्षेत्र में हमारा प्रदेश प्राचीन काल से ही अग्रगण्य रहा है। यहाँ के कवि मनीषियों का धार्मिक विचार इतना गूढ़ और महत्वपूर्ण था कि भारत संसार में धर्म के पथप्रदर्शक के रूप में ख्यात हो गया। प्रारम्भ से ही गुजरात एक धर्म परायण राज्य रहा है। मध्यकाल में मुसलमानों के आक्रमणों से त्रस्त जनता कुछ समय के लिए स्तब्ध सी बन गई थी। मुगल शासकों ने शासन के साथ-साथ धर्म का प्रचार प्रसार आरम्भ किया तो हिन्दू जनता सावधान हो गई। मूर्ति पूजा, धर्म सम्मेलन आदि पर कड़ी नजर रखी जाती थी। इन परिस्थितियों में जनता का आध्यात्मिक विषयों पर आकर्षण उपजना साधारण था। ऐसे समय में संत महात्मा निरपेक्ष भाव से लोगों के मध्य आध्यात्मिक भावना को दृढ़ करने के लिए विभिन्न रूपों में प्रयत्नशील हुए। न केवल ज्ञान और उपदेश के द्वारा अपितु रचना प्रक्रिया के द्वारा भी जनता में धार्मिक जागरण को निरपेक्ष भाव से स्थापित किया। अपनी रचनाओं में उन्होंने जिन काव्य रूपों को महत्व दिया उनमें "साखी" का स्थान सर्वोपरी है। लघु काव्य रूप होने पर भी अध्यात्म और दर्शन जैसे गूढ़ विषयों को सुन्दर ढंग से वर्णन करके जनता के मध्य जागरण पैदा करने का महत् कार्य गुजरात के साखिकारों ने किया।

गुजरात के साखिकारों की लोकभाषा के प्रति तो प्रिती थी ही इतर भाषा के प्रति भी आदर दिखलाकर उन्होंने अपनी भाषा विषयक औदार्य का परिचय दिया है। इस तथ्य का प्रमाण है मध्यकाल का विपुल हिन्दी साहित्य जो गुजरात के संत भक्तों द्वारा रचा गया है। उन्होंने हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओं में साखियाँ लिखकर साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। गुजरात के अंचल में आवृत्त हिन्दी तथा गुजराती में रची गई इसी "अज्ञात एवं उपेक्षित साखी-साहित्य सम्पदा" की शोध एवं खोज आवश्यक है। मेरे शोध का विषय है कि क्या गुजराती कवि इस प्रकार की रचनाओं में सिद्ध-हस्त हैं ? क्या उन्होंने उसी लगन तथा अधिकार के साथ गुजराती में साखियाँ लिखी हैं ?

जिस प्रकार हिन्दी में लिखी है ? क्या दोनों क्षेत्रों में उनका समान अधिकार है ? यह सम्पूर्ण विषय शोध सापेक्ष है । मैं अपने अध्ययन में अतिव्याप्ति नहीं चाहती इसलिए विभिन्न काव्य रूपों का विवरण एवं अध्ययन छोड़कर केवल "साखी" पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहती हूँ । इस विषय में हमारे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं रीडर डॉ० रमणलाल पाठकजी ने मेरा उत्साह बढ़ाया और उन्हीं के मार्गदर्शन में हमने अपना शोध कार्य किया । गुजरात में निर्मित साखी-साहित्य न केवल संख्या की विपुलता अपितु काव्य गुणों की प्रचुरता की दृष्टि से भी गहरे अध्ययन के लिए समुद्रयवत् विषय वस्तु है । यह शोध निश्चय ही हमारे अध्ययन को गम्भीर और समीचीन बनाएगा । अतः यह अध्ययन ऊपरी स्तर का न होकर परतों को तोड़ता हुआ नए अनुसंधान-सूत्रों को प्रकाश में लाएगा ।

हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि किस प्रकार गुजरात के साखिकारों ने अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिन्दी में भी सहजरूपेण रचनायें की अर्थात् किस प्रकार हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओं से गहरे जुड़े थे । पूर्व-मध्यकालीन गुजराती कवि नरसिंह महेता से भी पहले और मीरा जैसे सगुण भक्त कवि तथा उत्तर मध्यकाल के अखो, धीरो, निरांत, प्रीतम, छोटय जैसे निर्गुण भक्त कवियों की उत्कृष्ठ साखियाँ हमें दोनों भाषाओं में मिलती है ।

गुजरात के साखिकारों ने स्वानुभव के द्वारा जीवन में जिन सत्यों की उपलब्धि की उन्हीं को साखियों में अभिव्यक्त किया । गुजराती कवि इस क्षेत्र में अर्थात् विभिन्न प्रकार की साखियों की रचना में बहुत आगे रहे हैं ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में अगर गुजरात में निर्मित हिन्दी साखियों पर ध्यान केन्द्रित करती तो उन्हीं कवियों द्वारा रचित गुजराती साखियाँ उपेक्षित रह जाती। अखा, प्रीतम, निरात, गवरीबाई, छोटय, जीवणदास आदि संतों की गुजराती साखियाँ अवहेलित रह जाती । परिणाम स्वरूप तत् कवियों का अध्ययन एकांगी होता । अतः हमने गुजरात के कवियों की हिन्दी और गुजराती दोनों प्रकार की साखियों का एक दूसरे के पार्श्व में अध्ययन करके दोनों के सर्जन में कवि को कैसे सफलता प्राप्त हुई है उसके प्रति यथास्थान निर्देश किया है ।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ को अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागों में विभक्त किया गया है । ।।। कथ्य, ।2। शिल्प । कथ्य के अन्तर्गत एक से छः अध्याय आते हैं । प्रत्येक अध्याय का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है -

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आधारभूत सामग्री का परिचय दिया गया है । प्रकाशित और अप्रकाशित दोनों प्रकार की सामग्रियों का प्रयोग करने के कारण इसे दो भिन्न भागों में लिखा है- ।अ। प्रकाशित ।ब। अप्रकाशित ।

हमारे लेखन कार्य में जिन प्रकाशित ग्रन्थों से सहायता मिली है उनकी समीक्षा ।अ। विभाग के प्रकाशित भाग में विस्तृत रूप से प्रस्तुत की गई है तथा जिन अप्रकाशित ग्रन्थों का उपयोग किया है उनकी आलोचना ।ब। विभाग के अन्तर्गत की गई है ।

द्वितीय अध्याय को भी दो भागों में प्रस्तुत किया गया है । ।अ। विभाग में "गुजरात में हिन्दी का उद्भव और विकास" के अन्तर्गत किस प्रकार गुजरात में हिन्दी, यहाँ के राजाओं, कवि संत भक्तों द्वारा स्वीकृत की गई तथा अपनी प्रतिपृती का विस्तार किया । हिन्दी भाषी प्रदेश के निकट होने के कारण विभिन्न सम्प्रदायों के द्वारा तथा मुसलमान बादशाहों और राजपूत राजाओं के हिन्दी प्रेम के कारण गुजरात में हिन्दी की पृष्ठभूमि तथा इस भाषा में रचित संतों की साखियों के क्रम-विकास को उद्घाटित किया गया है ।

।ब। विभाग के अन्तर्गत "गुजरात में साखियों के उद्भव और विकास" की रूपरेखा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । "साखी" अथवा "सीक्षी" अंग्रेजी में जिसे Witness कहा जाता है इसी अर्थ की ओर कबीर तथा गुजरात के अधिकांश संतों का संकेत परिलक्षित होता है । साखी, व्युत्पत्ति आदि का अध्ययन इस भाग में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत इस अंचल के लगभग 38 साखिकारों की जीवनी तथा उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है । कुछ ऐसे कवियों को हमने लिया है

जो कि अब तक अज्ञात थे । इन कवियों का जीवन-काल निश्चित करने और प्रामाणिक ढंग से उनका जीवनवृत्त प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इन कवियों का काल-खण्ड, प्रदेश, भाषा व्यवसाय, जाति, शिक्षा-दिक्षा आदि-आदि का निरूपण इस अध्याय में किया गया है । इन कवियों के कृतित्व में उनके व्यक्तित्व तथा उनके जीवन की घटनाएँ व परिस्थितियाँ प्रतिबिम्बित होने के कारण उनका अध्ययन प्रस्तुत करना आवश्यक माना गया है । सम्भव है गुजरात के अनेक महान संत भक्त विषय की सीमा के अन्तर्गत न आने के कारण छूट भी गये हों । उल्लेखित संतों का मूल्यांकन उनकी उपलब्ध साखियों के आधार पर ही किया गया है । साखिकारों द्वारा रचित फुटकल साखियाँ या साखी ग्रन्थों की चर्चा संक्षेप में प्रत्येक कवि के जीवन परिचय के पश्चात् की गई है । साखी संख्या, उद्देश्य, फल प्राप्ति आदि की चर्चा करने का भी प्रयास यहीं किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत साखियों में उपलब्ध दार्शनिक तत्वों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है । साखियों में ब्रह्म विषयक विचार, जीव, माया, मोक्ष आदि के निरूपण का विशद अध्ययन किया गया है । संतों में ब्रह्म विषयक जिज्ञासा होती है और उसका वर्णन भी वे विभिन्न प्रकार से करते हैं । किस प्रकार जीव माया जाल में फंस कर ब्रह्म से दूर होता चला जाता है उसका स्पष्ट चित्रण संतों ने अपनी साखियों में किया है । माया और मन के स्वरूप को संतों ने विभिन्न रूपों में व्यक्त किया है । ये दोनों उपकरण भारतीय दर्शन क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण गिने गए हैं । अतः इन दोनों के तात्त्विक स्वरूप का ऊहापोह यहाँ करने का उद्योग किया गया है ।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत संतों की साखियों में अध्यात्मिक भावधारा को उजागर करने का सन्निष्ठ प्रयत्न किया गया है । इस अध्याय के अन्तर्गत अध्यात्म के क्षेत्र में गुरू की आवश्यकता, गुरू शिष्य का सम्बन्ध, गुरू की महत्ता आदि पर साखिकारों के महत विचारों का निरूपण किया गया है । संत समागम, भक्ति, प्रेम, विरह, नामजप, योग, सुरति-निरति, सहजयोग, मन आदि महत्वपूर्ण विषयों के पश्चात् साखियों की रहस्यात्मकता पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है ।

षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत साखियों में निहित सामाजिक तत्वों का निरूपण किया गया है । साखियों में न केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों की ही प्रधानता होती है बल्कि उनमें सामाजिक विषयों पर भी संतों के विचार स्थित होते हैं । समाज का स्वरूप, उसकी सुधारवादी चेतना का अवलोकन करते हुए आलोच्य कवियों की साखियों में समाज दर्शन को प्रस्तुत किया गया है । मध्यकालीन समाज व्यवस्था में वर्णाश्रम का स्थान, जाति प्रथा ले चुकी थी । सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अनेक कारणों से जाति प्रथा धीरे-धीरे विकसित होकर सारे समाज में जहर फैला रही थी । मध्ययुगीन सामाजिक संगठन में हिन्दू-मुसलमान के वर्ग आपस में लड़ते रहते थे । इन्हीं सब सामाजिक समस्याओं का निरूपण एवं उनके निराकरण करने के लिए संतों ने अपनी साखियों में समाज हितार्थ विषयों को स्थान दिया । वे इस प्रयास में कहाँ तक सफल रहे इसका विस्तृत निरूपण यहाँ किया गया है ।

शिल्प विधान नामक दूसरे विभाग में और पूरे शोध ग्रन्थ के सातवें अध्याय में "साखी का रूप विधान" प्रस्तुत किया गया है । इस अध्याय में साखी के रूप विधान की चर्चा की गई है । साखी के रचनाविधान और अंगों में विभाजन की पद्धति को भी उजागर करने का प्रयास किया गया है । साखी काव्य रूप का साखिकारों ने स्वतंत्र रूप में प्रयोग करने के साथ-साथ विभिन्न काव्य रूपों के मध्य भी जो प्रयोग किया है इसकी आलोचना और रचनाकार की सफलता पर भी दृष्टिपात यहाँ किया गया है । साखी में रोचकता लाने के लिए इनका कहीं कहीं कहावतों के रूप में भी प्रयोग करने की प्रथा पायी जाती है । उदाहरण के साथ उनकी सम्यक् चर्चा भी की गई है ।

अष्टम अध्याय में भाषा समीक्षा की गई है । भाषा की दृष्टि से साखियों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि गुजरात के साखिकारों को विभिन्न भाषाओं का ज्ञान था तथा वे उनकी प्रयोग प्रणाली से भली-भाँति परिचित थे । संत परिब्राजक तथा घुमक्कड़ प्रकृति के होने के कारण उनकी वाणी

में विभिन्न भाषाओं और बोलियों का मधुर मिश्रण मिलता है । अखा, प्रीतम, छोटम, जीवणदास आदि संतों की भाषा में गुजरातीपन उनकी भाषा की निजी विशेषता है । उर्दू, फारसी, अरबी, मराठी, पंजाबी भाषा के शब्द भी साखियों में उपलब्ध है । साखिकारों ने देश, काल और पात्रों के अनुरूप ही भाषा, मुहावरे, कहावतें और न्यायों का प्रयोग साखियों में किया है । दीपक-तेल न्याय, हंस-क्षीर न्याय, फल-बीज न्याय आदि न्यायों के द्वारा ब्रह्म और जीव के सम्बन्ध का सरलीकरण किया है । इनके प्रयोग से गूढ़ तत्वों का निरूपण सहज और सरल हो गया है । एक सुन्दर, सहज रस का प्रवाह फुटकल साखियों में तथा साखी-ग्रन्थों दोनों में देखने को मिलता है ।

नवम् अध्याय में शैली-वैविध्य की समीक्षा है । प्रतीकात्मक शैली द्वारा ब्रह्म, जीव, जगत, माया विषयक गूढ़ तत्वों का सरलीकरण किया है । प्रकृति परिवेश से प्रतिकों का चयन करने के कारण साधारण लोग भी सहजता से साखियों को आत्मसात कर सकते हैं । पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के मधुर प्रतिकों के उपरांत कई प्रकार के प्रतिकों का सुन्दर विनियोग साखियों के दृष्टिगोचर होता है। संश्लिष्ट बिम्ब विधान की दृष्टि से जो इनका विशेष प्रदान है इसे भी यहाँ प्रथम बार विस्तार से प्रस्तुत किया गया है । साखी गेय काव्य है अत: तुकान्त, संगीत, वर्णों का रागानुसार प्रयोग आदि विशेषतायें भी संतों की साखियों में परिलक्षित होती है । साधारणत: उपदेशात्मक होने के कारण साखी में अलंकार प्राय: नहीं होते हैं परन्तु सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने के पश्चात् विभिन्न अलंकारों का विपुल प्रयोग मिलता है इसकी चर्चा भी इस अध्याय में समाहित है ।

उपसंहार के अन्तर्गत साखिकारों द्वारा रचित साखियों की उपलब्धि पर विचार किया गया है । अर्थात् साखिकारों के दर्शन, आध्यात्मिकता, सामाजिकता, भाषा, साहित्य की दृष्टि से जो उपलब्धियाँ हुई उनको प्रस्तुत किया गया है । तुलना केवल भाषा की ही नहीं संतों के दर्शन अध्यात्म विषयक भावधारा, काव्यकला आदि को ध्यान में रखकर की गई है । परन्तु काव्य की तुलना का उद्देश्य हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओं की साखियों में भाषा और भाव की समानता दिखलाना ही है ।

मेरे मार्गदर्शक डॉ० रमणलाल पाठकजी ने बताया कि गुजरात के ग्रन्थ भंडारों में अनेक अप्रकाशित साखियाँ दबी पड़ी है । अत: फिल्डवर्क भी अनिवार्य था । इस सिलसिले में मैं पुनिधाद (जि० बड़ौदा) गई थी, जहाँ राम-कबीर का सुन्दर मंदिर है । वहाँ के गादीपति यदुजी महाराज अत्यन्त स्नेहशील हैं। उनका सहयोग और उत्साह अगर न मिलता तो शायद ही मैं राम-कबीर सम्प्रदाय के अज्ञात साखिकारों को प्रकाश में ला पाती । इस कार्य में माणेकलाल राणा (सूरत) का सहकार भी प्रशंसनीय है । उनसे प्राप्त हस्तप्रतों की सहायता से मैंने अनेक कवियों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की । इनके अतिरिक्त ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट श्रीमती हंसा मेहता लाइब्रेरी, सेन्ट्रल लाइब्रेरी, प्रेमानन्द साहित्य सभा बड़ौदा तथा भो.जे. विद्याभवन अहमदाबाद के ग्रन्थ भंडारों में सुरक्षित पुस्तकों एवं हस्तलिखित पोथियों का बार-बार उपयोग करनेदेने पर इन सब के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ ।

अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी संस्कृत विभाग के डॉ० देवदत्त जोशी हमारे हिन्दी विभाग के डॉ० के.एम. शाह, डॉ० ए.के. गोस्वामीजी ने मुझे हस्तप्रतों को पढ़कर समझाने में सहायता प्रदान की । विभाग के अन्य जिन गुरुजनों ने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया उन सबकी मैं आभारी हूँ । डॉ० के.का. शास्त्री, डॉ० रामकुमार गुप्त तथा अन्य गुरुजनों की मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य सुझाव द्वारा मुझे प्रोत्साहित किया । डॉ० भावना मेहता की मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने देवा साहब प्रणीत राम-सागर की प्रतिलिपि भेजकर मुझे सहायता की ।

इस शोध कार्य को पूर्ण करने में श्रद्धेय डॉ० रमणलाल पाठकजी, जिन्होंने पाँच वर्ष अथक श्रम उठाया उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना तो औपचारिकता का पालन करना मात्र है । लेखिका उनकी सदा ऋणी रहेगी । इसके साथ ही लेखिका अपने परिवार के बुजुर्गों तथा पति के निरन्तर सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापन करती हैं । जहाँ तक हो सकता है टाइपिंग की गलतियों को सुधारने का प्रयत्न किया है फिर भी कुछ त्रुटियों के रह जाने के कारण लेखिका क्षमा प्रार्थी है ।

विनीत रानु मुखर्जी

- रानु मुखर्जी

xxxxxxxxxxx
x अनुक्रमणिका x
xxxxxxxxxxx

॥1॥ प्रथम अध्याय

आधारभूत सामग्री -

अ॥ प्रकाशित

ब॥ अप्रकाशित

॥2॥ द्वितीय अध्याय

1॥ गुजरात में हिन्दी का उद्भव और विकास
2॥ गुजरात में साखियों का उद्भव और विकास

॥3॥ तृतीय अध्याय

प्रमुख कवियों का जीवन और कृतित्व

संत ज्ञानीजी, नरसिंह महेता, भोमाराम,
संत कवि नायाजी, संत निर्वाण साहब,
भक्त कवयित्री प्रेमाबाई, संत दादू दयाल,
भक्त कवयित्री अन्नपूर्णा, संत तेजानंद स्वामी,
बाबा लोचन स्वामी, जीवणदास,राम-कबीर सम्प्रदाय॥
अखा, भक्त कवयित्री चन्द्रावती, अनिसा रोशन,
संत चेतन स्वामी, लालदास, मेकण दादा, जीवणदास,
प्रीतमदास, राजे भगत, रत्नो भावसार,
भक्त कवि गुलाबदास, रवि साहब, निरांत, गबरीबाई,
कुबेरदास - करूणासागर, अनवर खान, निर्मलदासजी,
वस्तो विश्वम्भर, भक्त कवि दयाराम, गिरधर,
देवा साहब, हरजीवनदास, छोटम, संत कंवलदास,
संतराम महाराज, संत महात्यमराम, अर्जुन

॥4॥ चतुर्थ अध्याय

दार्शनिक विचार -

ब्रह्म, जीव, जगत, माया, माया का स्वरूप,
माया से निजात, मोक्ष आदि

॥5॥ पंचम अध्याय

अध्यात्म भावधारा

गुरू, गुरू-शिष्य संबंध, गुरू की महत्ता, संत समागम,
आदर्श भक्तों के लक्षण, भक्ति, प्रेम, विरह, सामजप
योग, सरति-निरती, सहजयोग, मन, रहस्यात्मकता आदि

|6| षष्ठ अध्याय

सामाजिकता -

सामाजिक तत्व, नारी के विविध रूप, असत् नारी, व्याभिचारिणी, बाहिर्गामिता और बाह्याचारों का विरोध, वेश, कपटपूर्ण व्यवहार, सज्जन, भेदभाव, वर्णाश्रम, अन्य सामाजिक संदर्भ

|7| सप्तम अध्याय

साखियों का रचना विधान,
अंगों में विभाजन, विभिन्न रूपों में प्रयोग,
स्वतंत्र रूप में प्रयोग, कहावतों में प्रयोग

|8| अष्टम अध्याय

भाषा समीक्षा, मुहावरें, कहावतें, न्याय

|9| नवम अध्याय

शैली वैविध्य -

प्रतीकात्मक शैली, बिम्बात्मक शैली,
आलंकारिक शैली, संदर्भ गर्भित शैली,
प्रश्नात्मक शैली, कुंडलिवत् शैली,
समस्तपद शैली, असमस्त पद शैली,
अनुवादात्मक शैली, संगीत, तुकान्त,
वर्णों का सुन्दर विनियोग

|10| उपसंहार

|11| सहायक ग्रन्थ सूची

xxxxxxx